अध्यापक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

डा0 लोकेश त्रिपाठी
एसोसियेट प्रोफेसर
बी0एड0 विभाग,
बी0आर0डी-पी0जी0 कालेज, देवरिया

प्राचीन काल से हमारे देश में व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया मे शिक्षको की बेजोड़ भूमिक को स्वीकार कर, भावी नागरिको के निर्माण की जिम्मेदारी शिक्षकों को सौपने की परम्परा रही है। शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सतत उन्नत, प्रगतिशील, सरल, सहज, रोचक तथा बोधगम्य बनाने में अध्यापक की महती भूमिका रही है और उसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है तथा उसका स्थान अद्वितीय है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसे एक सहकारी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, जो गत्यात्मक एवं उभयमुखी दोनों ही है। ज्ञानात्मक पक्ष के विकास के साथ साथ व्यक्तित्व विकास को भी बराबर का महत्व प्राप्त है। स्वाध्याय-कौशल, सहयोगात्मक अधिगम, अनुप्रयोगात्मक प्रयत्न, आदि को विकसित करना शिक्षण का दायित्व बन चुका है और साथ ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिये विभिन्न शिक्षण प्रौद्योगिकों, मनोवैज्ञानिक नियमों-परिनियमों एवम आवश्यक युक्तियों, प्रविधियों तथा कौशलों का ज्ञान व प्रशिक्षण तथा प्रभावपूर्ण प्रयोग करने की संकल्पशक्ति व क्षमता का होना आवश्यक है। इन्हीं तकनीकों एवं कौशलों व उसके प्रभावी प्रयोग करने की क्षमता को विकसित करने का एक माध्यम अध्यापक शिक्षा है। अध्यापक शिक्षा के माध्यम से कुशल एवं दक्ष तथा प्रभावी अध्यापकों का निर्माण किया जाता है।

भारत में आधुनिक शिक्षक शिक्षा की शुरुआत ईसाई मिशनरियों द्वारा की गयी थी। प्रारम्भ में इसे शिक्षक प्रशिक्षण के नाम से जाना जाता था, किन्तु किल्पैट्रिक आदि के प्रयासों के परिणाम स्वरूप व्यापकता मिलने के बाद इसे शिक्षक शिक्षा के नाम से जाना जाने लगा। इस कहावत को कि, "शिक्षक जन्मजात होते हैं" की मान्यता के स्थान पर अब यह सर्वमान्यता है कि, किसी भी व्यक्ति में भावी शिक्षा एवं शिक्षण कला का ज्ञान व दक्षता विकसित कर योग्य अध्यापक बनाया जाना सम्भव है। आज भावी शिक्षकों को शिक्षण कौशलों में प्रशिक्षण के साथ साथ मूल-आधारों, दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, आधुनिक आईसीटी के प्रयोग तथा साथ ही साथ अपने राष्ट्रीय शिक्षा के क्रमिक विकास आदि का ज्ञान भी कराया जाता है।

अध्यापक शिक्षा के विकास एवं विस्तार हेतु राष्ट्रीय, राज्यीय एवं जिला स्तरीय अनेकों संस्थानों को अलग अलग स्तरों के रूप में विकसित किये गये हैं। ये संस्थाने बहुतायत में स्व-वित्त योजनाओं के अन्तर्गत आते हैं। शिक्षक शिक्षा संस्थानों का विकास तेजी से हुआ है यानि मात्रात्मक रूप से तो काफी विकसित हुई है, किन्तु गुणात्मक रूपों से उस स्तर तक नहीं। इसके अनेकों कारण हैं-

पहला यह कि ऐसे संस्थाओं में कतिपय योग्य शिक्षकों का अभाव जिनके अन्दर शिक्षण के प्रति निष्ठा, आस्था, कर्तव्य-बोध के प्रति उदासीनता, उपयुक्त शिक्षण कौशलों का भी अभाव देखा जा रहा है।

दूसरा यह कि, प्रभावी शिक्षण-अधिगम हेतु नवीन शिक्षण-अधिगम युक्तियों, पद्धतियों को न अपनाकर पुरानी

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण विधियों का प्रयोग करना अर्थात नये मनोवैज्ञानिक व्यवहारिक विधाओं से अपरिचित होना तथा उसे व्यवहारिकता प्रदान न करना।

तीसरा यह कि, पाठ्यक्रमों में अनेकों सुझावों के बाद भी परिवर्तन सैद्धांतिक पक्षों पर अधिक तथा व्यवहारिक पक्षों पर कम करना, उपयुक्त कौशलों के पूर्ण विकास अथवा अर्जन पर कम ध्यान दिया जाना एवं अनर्गल क्रिया-कलापों पर अधिक दिया जाना भी प्रमुख कारणों में से एक है।

चौथा यह है कि, अधिकांश प्रशिक्षण संस्थानों के पास उनका अपना शिक्षण अभ्यास हेतु विद्यालय या संस्थान नहीं है और प्रायः लगभग अधिकांश संस्थानों में योग्य, पर्याप्त अध्यापकों, प्रायोगिक विद्यालयों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों एवं उच्च उपकरणों की कोई सुविधा भी नहीं है। अभ्यास शिक्षण हेतु निम्नस्तरीय विद्यालयों की सेवा लेना मजबूरी होती है। चूंकि, अभ्यास शिक्षण के समय विद्यालय का नियमित पठन-पाठन प्रभावित होता है अतः प्रतिष्ठित संस्थायें इस प्रकार की सेवा नहीं प्रदान करती। निम्न स्तरीय विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास करने से छात्राध्यापकों को वांछित सघन प्रशिक्षण, उपयुक्त उचित प्रदर्शन व परीक्षण-पर्यवेक्षण के अभाव के कारण उचित कौशलों का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हो पाता है। इसका एक उदाहरण मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षण प्रशिक्षण के कार्यक्रमों में प्रशिक्षण प्रदर्शन निमित्त माडल विद्यालयों का अभाव होना भी है। प्रशिक्षण उपरान्त उपयुक्त इंटर्नशीप की समुचित व्यवस्था का अभाव होना भी इनके प्रमुख कारणों में से एक है।

पाँचवा यह कि, देश की जनसंख्या का कुछ 1: भाग दृष्टि, सुनने, बोलने या चलने फिरने की अक्षमता या यूँ कहें दिव्यांगता से ग्रस्त है, इतनी बड़ी दिव्यांग जनसंख्या के शिक्षण प्रशिक्षण एवं पुनर्वास हेतु आज विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की जरूरत है किन्तु, प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या और इनमें प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माँग और पूर्ति में एक अच्छा-खासा अन्तर है। वास्तव में विशिष्ट शिक्षा में व्यावसायिक रूप से धनोपार्जन की अपेक्षा सेवा भाव ज्यादा अहम होता है। संयोग से हमारे देश में ऐसे लोगों की और सेवा भाव, लगन और तत्परता की कमी भी है। अतः बहुत कम संख्या में लोग विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और करना चाहते हैं, जो प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं उनका स्तर बहुत ही निम्न स्तरीय होता है। विशिष्ट विद्यालयों का संचालन अधिकांश स्वैच्छिक स्व-वित्तपोषित संस्थान कर रहे हैं जो स्वयं भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं, उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक की जरूरत ही नहीं है। कागजों में तो वे फिट कर लेते हैं पर वास्तविकता इससे कोसो दूर है ।

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। अतः सच्चा शिक्षक वही हो सकता है जो स्वयं अपने जीवन में विद्यार्थी बना रहता है। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में "एक दीपक दूसरे को भी तभी जला सकता है, जबकि वह स्वयं जल रहा हो।" श्रेष्ठ अध्यापक बने रहने के लिये सतत अध्ययन की आवश्यकता होती है जो अध्यापक अपने ज्ञान का नवीनीकरण एवं परिवर्धन तथा सतत शिक्षण कौशलों में परिवर्तन व परिमार्जन नहीं करता है एक तो वह पुराना पड़ता जाता है तथा दूसरे श्रेष्ठता की दौर में पिछड़ जाता है उसकी प्रभावशीलता व प्रभाविकता क्षीण होती जाती है, अतः आवश्यकता इस बात की है कि वह अपने संपूर्ण शिक्षण काल में अपने ज्ञान में निरन्तर वृद्धि और उसका परिमार्जन व परिवर्धन करता रहे। यह तभी संभव है जब उसे सेवाकालीन शिक्षा की सभी सुविधायें सर्वसुलभ एवं उपलब्ध हों। कोठारी शिक्षा आयोग का उल्लेखनीय विचार रहा है कि "भारत की भावी पीढ़ी का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। इक्कीसवीं सदी के भारत में यह पीढ़ी कुशल एवं सम्भावनाओं से परिपूर्ण मानव संसाधन का अभिन्न अंग होगी।"

Scanned with OKEN Scanner

यह सर्वमान्य तथ्य है कि कक्षाओं में निर्मित होने वाली भावी पीढ़ी एवं उसे उपयुक्त कौशलों से युक्त मानव संसाधन बनाने में कुशल शिक्षकों का योगदान अहम होगा। कुशल शिक्षकों के निर्माण हेतु सुगठित, सुनियोजित एवं उपयुक्त शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के गठन की आज गहती आवश्यकता है। ऐसे अकुशल शिक्षक राज्यों एवं राष्ट्र की सर्वप्रमुख चुनौती हैं। यदि कोठारी आयोग की राय में "ज्ञान के समस्त क्षेत्रों" के दृष्टि से देखा जाये तो हम पायेंगे कि, आज के शैक्षिक परिदृश्य में होने वाली तीव्र प्रगति और शिक्षा के सिद्धान्तों एवं प्रयोगों में होने वाले निरन्तर परिवर्तन व विकास के फलस्वरूप भी हमारी शिक्षण व्यवस्था में सुविधाओं की कमी बराबर बनी हुई है और आज भी सेवाकालीन शिक्षा के लिये अवसर एवं सुविधाओं की भारी कमी अभी भी महसूस की जा रही है। साथ ही अधिकांश शिक्षकों में इसके प्रति एक नकरात्मक दृष्टिकोण भी देखी जा सकती है और यह नकारात्मक दृष्टीकोण वर्तमान में आईसीटी के प्रति भी देखी जी सकती है।

शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या स्व-वित्तपोषित संस्थानों की है। इधर विगत में कुछ वर्षों में सरकारों द्वारा विशेष कर उत्तर-प्रदेश में बड़ी संख्या में बी0एड्0 प्रशिक्षितों को प्राथमिक शिक्षा में सेवा देने के कारण बी0एड्0 की माँग बढ़ी थी और इस माँग की पूर्ति के लिये बड़ी संख्या में कई स्व-वित्तपोषित संस्थाओं का विकास मशरूम की खेती की तरह बढ़ा। अगर कतिपय संस्थाओं की भौतिक व तकनीकि संसाधनों की बात की जाये तो वह कर्मचारियों, उपकरणों, कार्यशालाओं, प्रयोगशालाओ, संसाधनकक्षों तथा ग्रन्थालयों की दृष्टि से विपन्न पाई जायेगी। अधिकांश संस्थानों में पर्याप्त योग्य शिक्षकों का अभाव है किन्तु प्रायोगिक परीक्षाओं में औरों से बेहतर परिणाम दे रहें हैं वहीं दूसरे तरफ विभिन्न तरीकों तथा गदों के परिप्रेक्ष्य में और अच्छे नंबरों के कमिटमेन्ट से मनमाना शुल्क वसूल रहें हैं। एन0सी0टी0ई0 भी अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता एवं नियन्त्रण रख पाने में असफल सिद्ध हो जा रही है। अधिकतर संस्थाओं में संसाधनों की कमी के साथ साथ बिना योग्य एवं उपयुक्त ढंग से चयनित शिक्षकों के अभाव में संस्थानें सकुशल निरन्तर चल रही है जिस पर कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं है। स्पष्ट है कि शिक्षक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य कुछ धूमिल व बदरंग जरूर है, किन्तु कुछ उपायों से इसके वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन भी लाया जा सकता है-

- शिक्षक शिक्षा के असीमित मशरूमिंग विस्तार को रोका जाना चाहिये , अति आवश्यकता और परिस्थितियों में कठोर मानकों के अनुरूप गुणवत्ता का ख्याल रख कर अनुमति प्रदान किया जाना चाहिये ।
- भारतीय पुनर्वास परिषद् व राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् तथा अन्य संस्थाओं में व्याप्त उदासीनता,भ्रष्टाचार को कम किया जाना चाहिये साथ ही राजनैतिक हस्तक्षेपों से उसे मुक्त किया जाना चाहिये ।
- संस्थाओं के इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने के लिये वर्तमान बजट में बढ़ोत्तरी कर पर्याप्त उचित संसाधनों से सम्पन्न बनाया जाये ।
- स्वैच्छिक संगठनों का सहयोग लेकर शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के प्रशिक्षण को बहुआयामी, संवर्द्धित और विशिष्ट बनाया जा सकता है। राज्य शासन को इनके सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अच्छे प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण का दायित्व कर्तव्यनिष्ठ, योग्य और क्षमतावान प्रशिक्षकों एवं संस्थानों को सौंपा जाना चाहिए। शिक्षकों के प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने, शिक्षण में नवाचारी पद्धतियों को विकसित करने सहित परीक्षण (मूल्यांकन) की व्यापक प्रविधियाँ तय कर उन्हें व्यवहारिक स्वरूप में लागू करने की दिशा में कारगर कदम

Scanned with OKEN Scanner

उठने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि प्रत्येक प्रदेश में एक शैक्षिक संदर्भ एवं स्त्रोत केन्द्र विकसित किया जाए।

- अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यों के लिए प्रशिक्षक या स्रोत शिक्षक को विद्यालयों में भेजकर शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है लेकिन इस तरह के प्रशिक्षण सिर्फ शिक्षण विधियों, शिक्षा मनोविज्ञान और विभिन्न योजनाओं पर केंद्रित हों न कि विषय शिक्षण पर आधारित हों।
- पाठ्यक्रम सुधार जोकि निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है पर बराबर चिन्तन, मनन, एवं कार्य किया जाना चाहिये और इसके मानवीय पक्षों तथा मूल्यों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये, जिससे शिक्षकों में अच्छी आदतों के साथ साथ उच्च आदर्श एवं मूल्यों का निर्माण भी हो सके।
- प्रवेश परीक्षाओं में अधिभार को कम कर अध्यापकीय अभिरूचि को परखने की नवीन विधा का प्रयोग होना चाहिये।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन में सी0सी0ई0 पद्धति को अपनाना श्रेयस्कर साबित होगा।

संदर्भः

- भट्टाचार्य,जी सी, अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005
- कुन्द्र, सी एल, इंडियन इयर बुक आन टीचर एज्यूकेशन, स्टर्लिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली,1988
- पारी, वी के, वीकमिंग बेटरटीचर, साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1976
- राजपूत जगमोहन सिंह, शिक्षा सपने और संसाधन, 2007
- रिसोर्स बुक आन टीचर एज्यूकेशन, एन सी ई आर टी पब्लिकेशन, एन सी ई आर टी, श्री अरविन्द मार्ग नई दिल्ली
- सक्सेना, एन आर स्वरूप, मिश्रा वी के एण्ड मोहन्ती आर के, टीचर एज्यूकेशन, आर लाल बुक डिपो, मेरठ,1998
- शर्मा,आर0ए0,(2002), टीचर एज्यूकेशन, इण्टर्नेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ।
- श्रीवास्तव,एस0एस0 (1988), शिक्षा में नवाचार एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा।

Scanned with OKEN Scanner